नाम- डॉ. प्रदीप कुमार राय (एसोसिएट प्रोफेसर, रोहतास महिला कॉलेज सासाराम)
विषय- राजनीतिशास्त्र
क्लास- बी.ए.(प्रतिष्ठा) पार्ट-01, सत्र- 2019-20
पेपर- 01
दिनांक- 13.07.2020

टॉपिक — राज्य और शासन संबंधी मार्क्सवादी विचारधारा

राज्य और शासन के संबंध में मार्क्स के विचार सामाजिक, आर्थिक व्यवस्था में परिवर्तन के क्रम में एक विवादास्पद सिद्धांत और दर्शन है जिसे आधुनिक समय की एक महत्त्वपूर्ण विचारधारा भी कह सकते हैं। इसे निम्न क्रमों से स्पष्ट किया जा सकता है—

(1.) राज्य की उत्पत्ति का कारण वर्ग-विभेद — मार्क्स राज्य को एक वर्गीय संस्था मानता है जिसका निर्माण एक वर्ग द्वारा दूसरे वर्ग पर आधिपत्य और नियंत्रण रखने के लिये किया गया। आदिम साम्यवादी अवस्था में समाज के सदस्यों के बीच हितों का कोई संघर्ष नहीं था समाज मिलकर अपने कामों का प्रबंध स्वयं कर लेता था और राज्य का कोई अस्तित्व नहीं था किंतु दास-प्रथा के युग में स्थिति बदल गई। उत्पादन के समस्त साधन पर स्वामी का आधिपत्य था और वे दास का शोषण करते थे। स्वामी वर्ग द्वारा बहुसंख्यक समाज पर अपना आधिपत्य बनाये रखने की दृष्टि से सेना, पुलिस, न्यायालय, कारागार आदि की व्यवस्था की गई और यहीं से राजसंस्था का सूत्रपात हुआ।

(2.) राज्य और शासन शोषण के यंत्र — मार्क्स के अनुसार राज्य का उदय वर्ग-विभेद के कारण हुआ जो सदैव शोषक वर्ग के सहायक के रूप में कार्य करती रही है। सामंती युग में सामंतों द्वारा बहुसंख्यक किसान जनता का शोषण और उत्पीड़न किया जाता था। पूंजीवादी युग में पूंजीपति वर्ग द्वारा राजसंस्था की सहायता से श्रमिक वर्ग का शोषण किया जाता है। वर्तमान लोकतांत्रिक राज्यों में भी कानूनों का निर्माण पूंजीपतियों के संपत्ति संबंधी और अन्य हितों की रक्षा की दृष्टि से ही किया जाता है।

(3.) अंतरिम काल में सर्वहारा वर्ग का अधिनायकत्व — पूंजीवाद के अंत के बाद भी राज्य कुछ समय तक अस्तित्व में रहेगा और इस काल में सर्वहारा वर्ग का अधिनायकवाद स्थापित होगा। जिसके द्वारा राज्य की शक्ति का प्रयोग पूंजीपतियों के प्रतिरोध को कुचलने तथा पूंजीवाद के

Scanned with CamScanner

अवशेषों को समाप्त करने के लिये किया जायेगा। मार्क्स इस सर्वहारा वर्ग के अधिनायकत्व को ही वास्तविक लोकतंत्र मानता है।

(4.) राज्यहीन और वर्गहीन समाज की स्थापना का आदर्श — मार्क्स के अनुसार सर्वहारा वर्ग के अधिनायकवाद के बाद जब विरोधी वर्गों का अंत हो जायेगा तो राज्य की सत्ता का भी अंत हो जायेगा और राज्यविहीन तथा वर्गविहीन समाज की स्थापना के बाद से ही वास्तविक साम्यवादी साम्यवादी समाज का आरंभ होगा। ऐसे समाज में प्रत्येक व्यक्ति को उसकी आवश्यकताओं और योग्यता के अनुरूप वस्तुयें एवं पारिश्रमिक प्राप्त होगा।

आलोचना — इसकी प्रमुख आलोचनायें निम्नवत् हैं —

(1.) राज्य एक वर्गीय संगठन नहीं वरन् नैतिक संगठन — मार्क्सवाद के आलोचकों के अनुसार राज्य एक वर्गीय संगठन न होकर नैतिक एवं स्वाभाविक संगठन है। उसका उद्देश्य मानवीय व्यक्तित्व का विकास है जिसका आधार शक्ति नहीं वरन् इच्छा है। अतः राज्य को एक वर्गीय संगठन मानकर चलना दुर्भावनापूर्ण विचार है।

(2.) वर्तमान राज्य सर्वहारा वर्ग का शत्रु न होकर मित्र — हम देख सकते हैं कि विगत् कुछ से अधिक वर्षों से राज्य द्वारा कल्याणकारी व्यवस्था को अपनाकर मनुष्य का विकास किया जा रहा है विकास के विभिन्न अवसर उपलब्ध कराये जा रहे हैं। श्रमिकों के हित, कार्य, अवकाश, असमर्थ के हित से संबंधित विभिन्न कानून बनाये गये हैं। राज्य आज निम्न(न्यूनतम) वेतन जैसी व्यवस्थाएं तक मदद कर रही है।

(3.) राज्य अस्थायी नहीं वरन् स्थायी — राज्य मानवीय स्वभाव की मूल स्थायी प्रवृत्तियों पर आधारित होने के कारण एक शाश्वत संस्था है और उसके विनाश की कोई संभावना नहीं है। साम्यवादी व्यवस्था में भी राज्य समाप्त होने के बजाय अधिक शक्तिशाली होता जा रहा है।

(4.) राज्य के विलीनीकरण की धारणा कपोल-कल्पित — ~~राज्य~~ मार्क्स के इस विचार को काल्पनिक और उपहासयोग्य बताया गया है। राज्य की शक्ति के बिना वर्गविहीन समाज को भी स्थिर नहीं रखा जा सकता। इस विचार में मानवीय सहयोग, प्रयत्न, न्याय, नैतिकता की भी उपेक्षा की गई है।

उपर्युक्त आलोचनाओं के बावजूद मार्क्स ने अपने विचार द्वारा नये दृष्टि से श्रमिकों के हित के प्रति एक नूतन सोच दी जिससे कि कालान्तर में लोककल्याणकारी राज्य की अवधारणा ~~स्पष्ट~~ रूप में आ सकी।

Teacher's Signature